Book | Ch.4

Preeti Jain

⇒ स्त्रोतो की विश्वसनीयता [The Credibility of Sources] :-

स्त्रोतो की विश्वसनीयता कई बार संदेह के घेरे में नही आती है और कई बार अपने आप अस्वीकृति देती है जैसे कोई भी व्यक्ति जिसका तलाक हो रहा है वह अपने पति / पत्नी के वकील के पास सलाह मांगने नहीं जाएगा, यहाँ दावे का स्त्रोत " वकील " अपने आप में अविश्वसनीय है उसके लिए कोई और आधार ढूंढने की जरूरत नहीं है. पर कई बार दावों के स्त्रोतो की विश्वसनीयता को लेकर इतनी स्पष्टता नहीं होती है तब निम्नलिखित कारक व्यक्ति को उनकी विश्वसनीयता स्थापित या निष्कासित करने में मदद करते है :-

i) अगर दावे का स्त्रोत वह व्यक्ति है जिसको उस दावे पर विश्वास दिलाने से कोई फायदा होता है तो वह दावा संदेह के घेरे में आ जाता है पर वही दावा किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जिसे उस दावे पर विश्वास दिलाने से फायदा नुकसान नहीं होने वाला है तो वह व्यक्ति ज्यादा विश्वसनीय होने लगता है।

यह नियम नाकारा तो नहीं जा सकता पर यह भी जरूरी नहीं है कि हर वह व्यक्ति जो दावे से फायदे में आए वह धोखा कर रहा हो और जिसका कोई फायदा नहीं है वह सारी सही

darshanmitra.school.blog

जानकारी दे।

(ii) भौतिक और अन्य लक्षण :-

ⓐ व्यक्ति की शारिरीक संरचना व हाव-भाव जैसे Nervous (बेचैन / परेशान) अधिक पसीना आना, आँखे न मिलाना, किसी भी व्यक्ति की विश्वसनीयता को कम कर देते है, वही धारा-प्रवाह तरीके से बोलना, बोली गई बात पर जोर देना, व्यक्ति की विश्वसनीयता को बढ़ा देते है। पर फिर भी लेखक का मानना है कि इनको किसी भी स्रोत की विश्वसनीयता का आधार नहीं बनाया जा सकता।

ⓑ आयु, लिंग, उच्चारण, व्यवहार, धर्म संस्कृति भी विश्वसनीयता को सुनिश्चित नहीं करते है।

ⓒ किसी व्यक्ति का व्यवसाय भी उस व्यक्ति के दावे की विश्वसनीयता कम या ज्यादा कर देता है पर नैतिकता संबंधित दावों के मामले में यह कारक भी अनुपयोगी है।

(iii) विशेषज्ञता [Expertise] :- ज्यादातर हमारी जानकारी उन लोगों द्वारा आती है जिनपर संदेह करने का कोई आधार नहीं होता। ऐसे लोग अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञता का निर्धारण किस प्रकार किया जाय इसके लिए लेखक कई आधार

darshanmitra.school.blog

प्रस्तुत करते हैं।

(a) शिक्षा :- किसी भी व्यक्ति की शिक्षा सिर्फ स्कूली या महाविद्यालयों से प्राप्त डिग्रीयों से ही निर्धारित नहीं की जा सकती क्योंकि कई बार डिग्रीयां दूरस्थ माध्यम (Distance learning, correspondence) से प्राप्त कर ली जाती है।

(b) अनुभव :- अनुभव किस प्रकार का है और कितना है ये दोनों ही बातें महत्त्वपूर्ण हैं। अनुभव तभी महत्त्वपूर्ण है जब वह मुद्दे से कोई संबंध रखता हो।

(c) उपलब्धि :- किसी भी व्यक्ति की उपलब्धियां उसके उस क्षेत्र में विशेषज्ञ होने की ओर इशारा करती हैं, पर यहाँ भी उपलब्धियाँ तभी महत्त्वपूर्ण हैं जब वह उस क्षेत्र में हों जिसके विषय में बात चल रही हो जिस प्रकार भौतिक विज्ञान में नोबेल पुरस्कार विजेता जनता के बीच सरकारी स्कूल शिक्षा, खेलों में सावधानी, परमाणु बम के विषय में अपने विचार देने की योग्यता नहीं रखता। इसमें कोई संदेह नहीं कि परमाणु बम विज्ञान का विषय है पर उसका प्रयोग किया जाए या नहीं उसका ~~प्रयोग किया जाए~~ अधिकार या फैसला वैज्ञानिक के पास नहीं है।

(iv) प्रसिद्धि/Reputation/ख्याती :- एक व्यक्ति की ख्याति भी उसके किसी क्षेत्र में विशेषज्ञ होने का मुख्य आधार है पर ख्याति के संदर्भ गर्भित हैं हम किसी व्यक्ति की

darshanmitra.school.blog

ख्याति को कितना महत्त्व देंगे यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह ख्याति किन लोगों के बीच में है, क्या यह आम लोगों के बीच है या उसी क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों के बीच है।

(v) ओहदा / पद [Position] :- किसी भी व्यक्ति को प्राप्त ओहदा इस बात की ओर इशारा करता है कि दूसरे लोग उसके बारे में कितना महत्त्व देकर सोचते हैं। किसी पद पर आसीन व्यक्ति से आए विचार अपने आप में सबूत है कि वह विषय विचार करने योग्य है।

अंततः कई बार एक ही क्षेत्र के विशेषज्ञों की राय में सहमति नहीं बनती है तब एक आलोचनात्मक चिंतक को ही फैसला लेना होता है कि वह किस को नकारे। कई बार विशेषज्ञ की राय को माने और किस राय गलत हो जाती है तो विशेषज्ञ की कही गई बात में भी विरोध नज़र आता है या उसकी बात तर्कपूर्ण नहीं लगती है तो उन्हें भी चुनौती देने से पीछे नहीं हटना चाहिए। कई बार विशेषज्ञ भी रिश्वत देकर खरीद लिए जाते हैं। तो बेशक दावों का स्रोत एक विशेषज्ञ हो एक चिंतक को चौकन्ना रहना चाहिए। अंत में

darshanmitra.school.blog

हम कई बार यह गलती कर देते हैं कि एक क्षेत्र के विशेषज्ञ को हर क्षेत्र का विशेषज्ञ मान लेते हैं, ऐसी स्थिति में विशेषज्ञ की कही गई बात और अविशेषज्ञ की कही गई बात में कोई फर्क नहीं है।

darshanmitra.school.blog